# बचपन के अन्तरंग साथी –सचित्र पुस्तकें

— अंजली नरोन्हा

*इस लेख में अंजली ने बचपन के मायने पर बात करते हुए यह बताने की कोशिश की है कि बच्चों के संदर्भ में बाल साहित्य से हमारी अपेक्षाएँ क्या होनी चाहिए और इन अपेक्षाओं पर खरा उतर पाने के लिए एक अच्छे बालसाहित्य के मानदण्ड क्या हों? इस बात को समझाने के लिये अंजली ने कुछ पुस्तकों को उदाहरण के स्वरूप सामने रखा है और उनकी समीक्षा की है।*

## भूमिका

बचपन के बारे में बात किये बिना, बाल साहित्य, चित्र पुस्तकों की बात करना थोड़ा मुश्किल है। बचपन की अवधारणा ही बाल साहित्य को साहित्य से कुछ अलग करती है। भारत में बचपन का महत्त्व हमेशा रहा है, हर समाज में कुछ अलग तरह से। बहुत समय तक बच्चों को उस समाज की सामान्य गतिविधियों में शामिल किया जाता रहा है, उनकी कुछ अलग खास जगह बहुत कम उम्र तक रही है। मध्यमवर्गीय परिवारों में, अपने धर्म के अनुसार बाल्यावस्था के अलग-अलग चरण पर उत्सव मनाने का रिवाज रहा है –जन्म व नामकरण, अन्नप्राशन, पहले कदम, किशोरावस्था के आगमन पर जश्न मनाना, आदि। समाज के जिन वर्ग या जातियों में शिक्षा का प्रचलन शुरू हुआ, वहाँ शिक्षा शुरू होने पर पट्टी पूजा जैसा उत्सव भी होते रहे है। जहाँ बच्चा –खास कर लड़का– केन्द्र में होता है। परन्तु, गरीब कामगार परिवारों में इन सब के लिये फुर्सत व संसाधन कम ही होते थे – वहाँ बच्चों से अपेक्षा होती थी कि वह माँ बाप के कामों में हाथ बटाएँ, पर पूरा समुदाय बच्चे की परवरिश में भाग लेता। स्पष्ट है कि बच्चे किसी न किसी तरह केंद्र मे रहे हैं और उन पर ध्यान दिया जाता रहा है –उन से प्यार से बात करना, डाँटना (पीटना भी), समझाना, काम सिखाना, बड़ों से कैसे रिश्ता बनाना आदि। परन्तु वयस्क समाज से हटकर बच्चे की नजर और परिप्रेक्ष्य की जगह नहीं थी। उसे एक छोटा इनसान ही माना जाता रहा है यानी बड़ों का छोटा प्रतिरूप। आधुनिक समय (पिछली दो शताब्दियों) में ही बच्चे की अलग से पहचान को समाज में जगह मिलना शुरू हुआ है। बच्चे और वयस्क के सोचने-समझने के तौर तरीकों को अलग-अलग तरह से देखा जाने लगा है सिर्फ मात्रात्मक ही नही गुणात्मक रूप से भी। बच्चे और व्यस्क के बीच बात-बहस, द्वन्द और अंतर्क्रिया को बच्चे के विकास का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाने लगा है। इसी दौर में साक्षरता और शिक्षा का भी विस्तार हुआ और पठन सामग्री के द्वारा दूर दराज की जगहों व देशों के बीच विचारों का आदान-प्रदान बढ़ा। जिसकी वजह से लिखित सामग्री का महत्त्व बढ़ता गया और इसके चलते साहित्य की छपाई और विस्तार भी बढ़ता गया है।

## बाल साहित्य से अपेक्षा

साहित्य से एक प्रमुख अपेक्षा यह होती है कि वह समाज में हो रही घटनाओं –राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक उपक्रमों पर पैनी नजर डाले और वैकल्पिक दृष्टि प्रदान करे। बाल साहित्य की जब भी बात होती है, उसे हमेशा वयस्क साहित्य से अलग कर के देखा जाता है। ऐसा

माना जाता रहा है कि बच्चे तो समाज में हो रही घटनाओं पर चिन्तन मनन नहीं कर सकते, विकल्प नहीं सुझा सकते -उन्हें तो दुनिया और समाज की परिपाटियों से अवगत कराना है, अच्छा वयस्क कैसे बनना है, ये सिखाना है -और इन सब के लिये बाल साहित्य को एक सशक्त माध्यम माना जाता रहा है। जो वयस्क दुनिया से उनका परिचय कराए और उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने मे मदद करे।

जबकि दूसरी ओर विकसित हुई आधुनिक समझ बताती है कि बच्चे के सशक्त व्यक्तित्व विकास के लिये उसे अपने विचारों के लिए जगह मिलनी चाहिए, उन विचारों को उड़ान देने के लिए समर्थन चाहिए, रोजमर्रा जिन्दगी में वयस्कों के साथ हो रहे द्वंद्व, दुखद और सुखद अनुभवों के साथ जोड़ने और बांटने के लिए मौके चाहिए। एक बाल साहित्य इस तरह मौके अच्छी तरह मुहैया करा सकता है।

तीसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि अब यह लगभग अविवादित है कि पढ़ना सीखने में बाल साहित्य की अहम भूमिका है। केवल अक्षर व मात्रा ज्ञान से पढ़ना नहीं सीखा जा सकता, खास तौर पर जब यदि पढ़ने का मतलब समझ कर पढ़ना ही समझा जाए। पढ़ना शुरू करने से भी पहले यदि पुस्तकों के साथ बच्चे की दोस्ती हो जाए, तो पढ़ना सीखने का पहला चरण मानों शुरू हो गया। कहानी सुनना, खास कर पढ़कर सुनाई गई कहानियाँ आदि, चित्र देखना और चित्रों को सुने हुए से जोड़ना, पुस्तक के पन्ने पलटने जैसी क्रियाएँ साक्षर संस्कृतियों में उतनी ही सहज होती हैं जितना कि गैर साक्षर समाजों में कहानी सुनाना और गपशप करना। पढ़ना सीखने से पूर्व ये संस्कार, पढ़ना सीखने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इन तीनों ही भूमिकाओं में लिखित सामग्री और चित्रों का बराबरी का महत्त्व है। लिखित सामग्री और चित्र के अलग-अलग पहलू हैं जो महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। पिछले 49 वर्षों में जन्म से लेकर 7 साल के बच्चों के लिए काफी सामग्री छपी है। कई प्रकाशक अब बच्चों, खास तौर पर शिशुओं के लिए भी पुस्तकें छाप रहे हैं। अंग्रेजी में यह बाल पुस्तकों का संसार ज्यादा व्यापक है -पर हिन्दी में भी उपलब्ध पुस्तकें बढ़ी हैं। कई नए लेखक और चित्रकार इस में शामिल हुए हैं। शिशुओं के लिए उपलब्ध पुस्तकों के इस व्यापक संसार के आधार पर अब इस के अलग-अलग पहलुओं पर विचार विमर्श किया जा सकता है। वर्तमान में उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर इस लेख में ऐसे ही कुछ पहलुओं पर विमर्श उकसाने की कोशिश है।

हालांकि यह कहना बड़ा मुश्किल है कि एक अच्छी कहानी के क्या गुण होने चाहिये, फिर भी इन से संबन्धित कुछ पहलुओं पर बात की जा सकती है। हर उम्र के लिए विभिन्न तरह की पुस्तकें है, जिन के आधार पर विमर्श आगे बढ़ाया जा सकता है। इस लेख को शिशुओं के लिए प्रकाशित चित्र पुस्तकों पर केन्द्रित रखा है। इन पुस्तकों के चित्रों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की है और इन्हीं पुस्तकों की लिखित सामग्री के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की। उपरोक्त चर्चा के आधार पर कुछ चित्र पुस्तकों की खासियतों और कमजोरियों पर बातचीत की है।

## शिशुओं के लिए चित्र-पुस्तकें

पढ़ना, समझना, चिन्तन और चर्चा के लिए पुस्तकों की एक अहं भूमिका है। चिन्तन करने के लिए पुस्तकों से जुड़ाव जरूरी है। जुड़ाव कैसे बनता है इसके लिए निम्न लिखित पहलू महत्त्वपूर्ण माने गए हैं।

### विषय

परिचित और रोचक विषय- आम तौर से लोग यह मानते हैं कि विषय बच्चों के आसपास के होने चाहिए जिससे बच्चे परिचित हों; लेकिन यह हमेशा जरूरी नहीं होता। कई बार बच्चों को दूर की और काल्पनिक चीजें भी बहुत रोचक लगती हैं और कई बार पास की परिचित चीज भी अच्छी नहीं लगती। विषय के बारे में क्या लिखा और चित्रित किया गया है? बच्चे की अपनी कल्पना और अपने विचारों के लिए उसमें जगह है कि नहीं, इससे भी विषय खास पाठक के लिए रुचिकर बन जाता है।

### पात्र

पात्र ऐसे हों जिन से बच्चे जुड़ाव महसूस करें, यह जुड़ाव उनकी भौतिक या जहनी जिन्दगी से हो सकता है। बच्चों की रुचि उनके अनुभवों और परिचय से बनती है, और उनकी अपनी फितरत के हिसाब से भी बनती है। जब किसी पुस्तक के पात्र खुद बच्चे होते हैं, तो आम तौर से शिशु पाठक उन से जुड़ पाते हैं बशर्ते उनके कारनामों में वो बचपना, वो शरारत हो जिसे वे पहचान सकें। अलग बच्चे अपनी जहनी और भावनात्मक जिन्दगी को अलग नजरिए से देख रहे होते हैं; इसलिए हर बच्चे को हर तरह का बाल पात्र पसन्द आए, यह जरूरी नहीं किसी को शरारती बच्चे पसन्द आते हैं, किसी को शान्त और किसी को दबंग।

पात्रों में जानवर हों- ये 2 वर्ष से 7 वर्ष के बच्चों के लिए काफी आकर्षक होते हैं। पर विरले ही ऐसी किताबें मिलती है खास तौर से हिन्दी बाल साहित्य में, जो कि उन जानवरों की प्राकृतिक फितरत पर आधारित हों। अधिकतर में पात्र भले ही जानवर हों, पर उनकी फितरत इनसानों की-सी दिखाई जाती है।

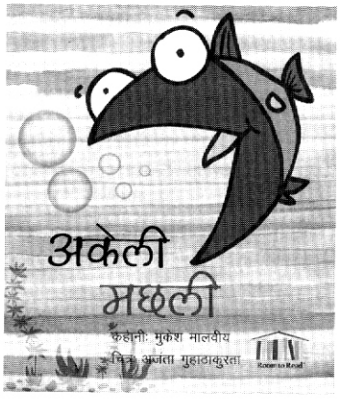

## पात्र विवरण

छोटे बच्चों के लिए लिखी किताबों में यदि पात्र विवरण शब्दों में हो तो शिशुओं की रुचि खत्म हो जाती है। बच्चों के लिए पात्रों का परिचय उनके कारनामों से या फिर चित्रों से बेहतर हो पाता है।

## कहानी -कथानक और विस्तार

कहानी की केन्द्रीय समस्या- कहानी में जब तक कोई टेढ़ी खीर नहीं हो जिसे पार लगाना हो, कोई दिलचस्प मोड़ नही, तो मजा नहीं आता। यह बात बच्चों की कहानियों के लिए भी उतनी ही जरूरी है। परन्तु अकसर बाल साहित्य के लेखक सोचते हैं कि बच्चों को कुछ ज्ञान देना या समझाना है। इनमें विषय तो बच्चों के करीब का होता है लेकिन अकसर बात में कुछ खास दम नहीं रहता। एक कहानी में कई समस्याएँ भी हो सकती हैं -एक समस्या का समाधान दूसरी समस्या को जन्म दे सकता है। जब तक कि केन्द्रीय समस्या एक ही है, छोटे बच्चे कहानी में ध्यान लगाए रख सकते हैं -जैसे बुढ़िया की रोटी में समस्या के हल की खोज एक और समस्या खड़ी होती है पर केन्द्रीय समस्या एक ही है कि बस बुढ़िया को अपनी रोटी वापस चाहिए।

## भाषा का उपयोग

एक धारणा यह है कि शिशुओं की पुस्तकों में सरल छोटे-छोटे सीधे सादे वाक्य होने चाहिए। तर्क यह है कि बच्चों को मुश्किल भाषा समझ में नहीं आएगी। लेकिन पुस्तकों को एक मौके के रूप में यदि देखें तो इन के माध्यम से बच्चों को भाषा के नए उपयोग और लहजे से परिचय भी होता है -बच्चों को भाषा से खेलने में मजा भी आता है। 'उधर भालू साहब सैर को निकल तो आए थे, लेकिन पछता रहे थे। '(भालू ने खेली फुटबाल से) ऐसी भाषा से शुरू से ही परिचित होने से बच्चों की भाषा समृद्ध होती है।

## चित्र

कहानी किस माहौल में गढ़ी गई है -इसे उजागर करने में चित्रों की अहम भूमिका होती है। जंगल या गाँव या शहर या घर की पृष्ठभूमि है -किस प्रकार का है? वहाँ क्या-क्या हो रहा है? कौन क्या कर रहा है? ये सब चित्र से समझ में आता है।

चित्र पुस्तकों में चित्र और लिखित सामग्री एक दूसरे के पूरक हों-जो बात शब्दों में कही जा चुकी है -उसकी अपनी कल्पना बनाने की छूट पाठक को होनी चाहिए, उसी को चित्रित करने में दोहराव होता है। चित्रों की अपनी एक भाषा होती है, शैली होती है, जिसे बच्चे चित्र पुस्तकों से पढ़ना सीखते हैं।

## कुछ पुस्तकों पर गुफ्तगू

यहाँ हम बात करेंगे कुछ ऐसी किताबों की, जिनमें बच्चे ही पात्र हैं या फिर, जानवर। हम बात करेंगे पुस्तकों के चित्रों के बारे में और उनके शब्दों के बारे में, चूँकि चित्र और शब्द ही तो मायने गढ़ते हैं, सपनों का जाल बिछाते हैं या फिर समस्या खड़ी भी करते हैं और समस्याएँ सुलझाते भी हैं। हम अच्छी किताबों की बात करेंगे और कुछ जो उतनी अच्छी न भी हों पर किसी न किसी रूप में वे बच्चों की दुनिया में एक भूमिका अदा कर रही हैं।

ये हैं हमारी किताबें, हम ही तो हैं इनके पात्र। ये आज कल की पुस्तकें हैं, जिनमें बच्चे ही पात्र हैं। अपेक्षा यह है कि बच्चे पात्र होंगे तो जो बच्चे इन पुस्तकों को पढ़ेंगे देखेंगे, उनका इन पुस्तकों से जुड़ाव बनेगा। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित बरखा सीरीज इसी तरह की एक पुस्तक शृंखला है। प्रत्येक कथावस्तु में दो मुख्य पात्र हैं, जिन के द्वारा कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं। जमाल और मदन पड़ोस में रहने वाले दोस्त हैं, रमा और रानी दो बहनें हैं, काजल और माधव भाई-बहन हैं

जीत और बबली भी दो दोस्त हैं और तोसिया और मिलि दो सहेलियाँ। इन बच्चों की कहानियाँ हमें बच्चों के खेल, खाने पीने और पकाने के अनुभव, उनके जानवरों और बड़ों से रिश्तों की दुनिया में ले जाते हैं। 3 स्तरों में विभाजित ये सीरीज खास तौर पर छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करती हैं। हर स्तर में 9 किताबें हैं। ये स्तर पढ़ने के स्तरों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं -पहले स्तर में एक चित्र के साथ एक छोटा वाक्य, बढ़ते-बढ़ते चौथे स्तर पर हर पन्ने पर 3 वाक्य तक जाता है, और वाक्य भी थोड़े बड़े हो जाते हैं। यह पढ़ना सीखने के स्तरों को एक ही आधार पर स्तरित करता है।

हर कहानी में दो बच्चे हैं -कहीं मिली और तोसिया, कहीं जमाल और मदन तो कहीं जीत और बबली। इन कहानियों में जेन्डर बराबरी और संवेदनशीलता काफी नजर आती है। लड़कियाँ पतंग उड़ाती हैं और साइकिल चलाती हैं, तो लड़के चाय और रोटी बनाते हैं। हर तरह के बच्चे हैं -सरदार, मुसलमान, उत्तरी पूर्व राज्य के बच्चे आदि। लेकिन मध्यम वर्गीय, निम्न मध्यम वर्गीय लगते हैं -एकदम गरीब बच्चे नहीं हैं, न आदिवासी हैं- पर उच्च वर्गीय बच्चे भी नहीं हैं। चित्र बहुत अच्छे नहीं हैं, बच्चों पर केन्द्रित इन पुस्तकों में चेहरों में गहराई नहीं बन पाई है, व्यक्तित्व नहीं उभरता। अधिकतर चित्र वही दिखा रहे हैं, जो कि लिखित में है, उनके बीच पूरकता नहीं झलकती। लेकिन हर कहानी में एक छोटी-सी समस्या या मोड़ जरूर है -जमाल रोटी बना रहा है तो गोल नहीं बनती, गिल्ली तालाब में गिर गई, चाय कड़वी हो गई, छिपकली की पूँछ कट गई आदि-आदि। यह एक ऐसी समस्या जो भारत में हर कहीं मिल सकती है। यह पुस्तकों की ताकत भी है और कमजोरी भी। हर जगह के बच्चे इन कहानियों से जुड़ सकते हैं; पर इनमें कोई बहुत खास भी नहीं उभर कर आता -खास तौर पर चित्रों में।

चूँकि आम तौर पर बच्चों की दुनिया को भारतीय बाल साहित्य में कम ही जगह मिलती है, इसलिए ये पुस्तकें बच्चों को बेहद पसन्द आ रही हैं। निश्चित तौर पर ये पुस्तकें बच्चों की पढ़ने की क्षमता पर भी अपना असर छोड़ती हैं।

प्रथम द्वारा प्रकाशित कई किताबें भी ऐसी हैं; जिनमें बच्चे केन्द्र में हैं -'घर जाना है', 'वो वाला चाहिए', 'चलो किताब खरीदने', 'हम बाज़ार गए', 'माँ जल्दी करो', आदि -ऐसी ही कुछ किताबें हैं। एक लड़की स्कूल के बाद घर जाने की जल्दी में है। भाषा सामान्य है -लड़की का नाम नहीं है क्योंकि पूरी कहानी प्रथम पुरुष में है -वह कोई भी हो सकती है। पात्रों की ठोस पहचान कहानी को और सशक्त बनाती है। चित्रों से पता चलता है -उसके हुलिये और डीलडौल से, कि वह एक मध्यमवर्गीय बच्ची है। इस पुस्तक में गुंजाईश थी कि चित्रों को सशक्त कर कहानी में जान डाली जा सकती थी- लेकिन चित्र काफी सामान्य हैं और विरोधाभासी भी -स्कूल जहाँ से कहानी शुरू होती है, गाँव का स्कूल लगता है -बस्ती के बाहर, पर बाकी कहानी का माहौल शहरी है। चित्र और लेखन में पूरकता

नहीं झलकती, दोहराव ही है। कहानी में कोई खास मोड़ भी नहीं है, बस एक विवरण है- लड़की क्यों जल्दी में है, इसका कोई आभास नहीं मिलता और अन्त में पता चलता है कि उसके माता पिता को काम पर जाना है। इस समाधान और जल्दी को दर्शाना -खास मेल नहीं खाता। प्रथम की कई कहानियाँ इसी तरह की हैं -बच्चों की ज़िन्दगी की साधारण सी घटनाएँ, सामाजीकरण का पुट-कुछ सीख छिपी हुई। 'वो वाला चाहिए' में भी एक सन्देश छिपा है। नीचे से निकालने वाली चीज नहीं माँगना दिक्कत होती है। इस सन्देश में अपने आप में समस्याएँ हैं, नीचे से निकालने की समस्या को हल करने का रास्ता दिखाने के बजाए, उस समस्या से ही मुँह मोड़ने की सीख दी जा रही है। 'माँ जल्दी करो' एक बेहतर किताब है। इस मायने में कि इसमें बच्चा माँ से बार-बार कह रहा है जल्दी करने की कि स्कूल को देर हो जाएगी, बच्चा सही है और मां देर कर रही है।

इन सब के बावजूद, ये पुस्तकें भी बच्चों को पसन्द आ रही हैं। रंगीन चित्र, आसान भाषा और बच्चों की जिन्दगी को घेरे हुए। पर यदि हमें कुछ सोचने समझने वाले बच्चे विकसित करने हैं तो ये पुस्तकें काफी कमजोर पड़ती हैं। चाहे वे बरखा सीरीज हों या प्रथम की कई सारी किताबें, एक बड़े पैमाने पर बच्चों की जिन्दगी और कहीं-कहीं बच्चों के परिप्रेक्ष्य को भी हिन्दी बाल साहित्य में जगह दी है। ये अपने आप में एक उपलब्धि है।

ऐसी ही कुछ पुस्तकें एकलव्य ने भी प्रकाशित की हैं- जैसे प्रणव नाम के एक लड़के के स्कूल शुरू करने के समय पर आधारित कुछ किताबें। इनमें भी कुछ खास मोड़ या सशक्त कथानक या चित्र नहीं। जहाँ साहित्यिक रूप से इन में सरलीकरण बहुत है, वहीं पढ़ना सीखने के हिसाब से इन सभी पुस्तकों ने काफी मदद की है। परन्तु अब और भी किताबें हैं जिसमें बच्चे और उनकी दुनिया केन्द्र में है, उनका नजरिया भी और उनकी कल्पनाएँ भी। बच्चों में विविधता है। एक ऐसी किताब है 'मैं तो बिल्ली हूँ'। रिन्चिन द्वारा लिखी इस किताब का चित्रण जीतेन्द्र ठाकुर ने किया है। एकलव्य द्वारा प्रकाशित यह किताब, पन्नी बीनने वाले बच्चों की जिन्दगी पर आधारित है। यह बात कहानी में बताई नहीं जाती, पर चित्रों और कहानी के कथन में आ जाती है। 'टिंटी ने आँखें

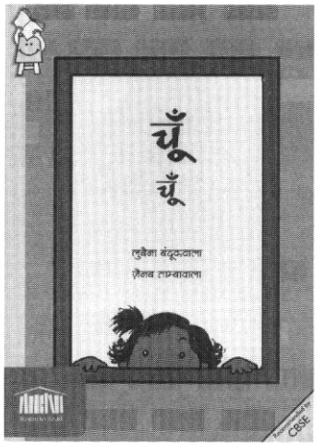


खोलकर पन्नी में से आसमान को निहारा' 'टिंटी चलो कचरा बीनने चलो'। चित्र भी कचरा बीनने की बस्ती का नजारा देते हैं। चित्र भी काफी अलग तरह के हैं। उनमें एक अस्पष्टता है, जो बच्चों को अपनी कल्पना के लिए जगह देती है। कहानी और बेटी के एक मौखिक काल्पनिक खेल पर आधारित है। ये कहानी यह एक साधारण कहानी नहीं है। समाज के हाशिये पर रह रहे बच्चों की मस्ती को केन्द्र में रखकर यह कहानी माँ और बेटी के बीच के सौम्य रिश्ते की ओर ध्यान खींचती है।

रूम टू रीड द्वारा प्रकाशित, इफ्फत और राशिद सीरीज की कहानियाँ बच्चों और बड़ों के बीच एक अलग ही रिश्ता दिखाती हैं। इफ्फत और राशिद नाम के दो शरारती बच्चे इन कहानियों के केन्द्र में हैं। बच्चे बड़ों को उल्लू बनाते हैं या फिर बड़ों द्वारा उल्लू बनाने की कोशिश को ताड़ जाते हैं -'गप्पी चाचा के साँप और मगरमच्छ की बड़ी-बड़ी गप हाँक रहा है और बच्चे उसे ही बेवकूफ बना देते हैं। ये कहानियाँ उन बड़ों पर भी एक कटाक्ष हैं, जो बच्चों को बेवकूफ समझते हैं, और ऐसे शरारती और तेज बच्चों के लिए समाज में स्वीकार्यता भी बनाते हैं। ये बच्चे कभी गप्पी चाचा को, कभी माँ को, तो कभी पूरे मोहल्ले को बेवकूफ बनाने में कामयाब हो जाते हैं।

रूम टू रीड की एक और कहानी है लाली को मिला बीज। हालाँकि इस कहानी के केन्द्र में भी एक बच्ची है, और चित्र भी आकर्षक हैं, इसलिए यह पुस्तक, बच्चों में लोकप्रिय पाई जाती है; पर कहानी की हैसियत से यह थोड़ी कमज़ोर पड़ जाती है। न कहानी में कोई समस्या, न कोई मोड़, जिससे उत्सुकता बढ़े। भाषा भी सपाट। कौन सा पेड़? कौन सा फल? कुछ पता नहीं चलता और इसलिए कोई रिश्ता भी नहीं बन पाता। सामान्यीकृत रूप से पेड़ों के साथ रिश्ता बना पाने के लिए बहुत सारे अलग-अलग पेड़ों से खास रिश्तों की जरूरत है। इस कमी को पूरा करने के लिए कहानी का उपयोग करते समय, बच्चों के अपने अनुभव के पेड़ों की बातचीत कराई जा सकती है, और उनके चित्र भी बनवाए जा सकते हैं। बीज बोने और पेड़ की परवरिश करने की गतिविधियों के लिए भी यह पुस्तक मौका दे सकती है। अगर पेड़ का नाम हो जाता, तो एक कदम बेहतर होता, यदि कोई घटना भी जुड़ जाती तो और बेहतर। पेड़ों की रोचक बातों के बारे में जानकारी आधारित चित्र-पुस्तकें भी बच्चों को रोचक लगती हैं; पर जानवरों की पुस्तकों से कुछ कम। सबसे बड़े, सब से छोटे पेड़, रात को खिलने वाले पेड, दूसरे पेड़ों पर परवरिश पाने वाले पेड़, कीट भक्षी आदि। हिन्दी में इस तरह की जानकारी आधारित चित्र-पुस्तकें बहुत कम हैं।

बच्चों को केन्द्र में रखने का एक और प्रयास अब जोर पकड़ रहा है -बच्चों की अपनी लिखी कहानियाँ। लगभग बच्चों की हर पत्रिका बच्चों की कृतियों को अपनी पत्रिका में जगह देती है; पर एकलव्य ने इन कृतियों के संकलन भी छापे हैं। अब इन में से कुछ कहानियों को चित्र-पुस्तकों का स्वरूप भी दिया है। साँप ने सोचा, मेरी गाए जनी और पतंग, अभी हाल ही में आई कुछ किताबें हैं। अब चलते हैं ऐसी कहानियों की ओर जिन में पात्र हैं जानवर, इस उम्र के बच्चों के दूसरे पसन्दीदा पात्र।

## जानवर हैं हमारे दोस्त

छोटे बच्चों को जानवर बहुत अच्छे लगते हैं, शायद इसलिए कि वे बड़ों की तरह, डाँटते, फटकारते, पीटते नहीं। खास कर छोटे जानवरों के साथ बच्चों का गहरा रिश्ता बनता है। जानवरों को केन्द्र में रखते हुए दो तरह की कहानियाँ सामने आती हैं- एक जो जानवरों को जानवरों की तरह देखती हैं, उनकी फितरत को ध्यान में रखती हैं और दूसरी, जिन में जानवर मानवीय गुण ले लेते हैं। महागिरि एक कहानी है, जो कि कई वर्षों से बच्चों में बहुत लोकप्रिय रही है। चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित यह कहानी एक हाथी के बारे में है। महागिरि नामक इस हाथी को खम्भे गाड़ने का काम करना है। एक गड्ढे में उसे एक बिल्ली का बच्चा दिख जाता है और हाथी उस पर खम्भा नहीं गाड़ता। इसके लिए वह खूब मार भी खाता है। परन्तु आज कल जानवरों पर आधारित अधिकतर कहानियाँ मानवीय गुण लिए हुए दिखती हैं। चाहे वो एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'भालू ने खेली फुटबाल' हो या 'चींटा', चाहे रूम टू रीड की 'मछली'। इन किताबों को बच्चे तो बहुत पसन्द करते हैं -इन के चित्र और भाषा रोचक है- परन्तु ये कई बार उस जानवर की प्रकृति के खिलाफ भी होती हैं जिस के बारे में कहानी है। चींटे आम तौर पर बड़े समूह में रहते हैं, चींटे से कहना कि वह चींटी के लिए विभिन्न काम कर के रखे ताकि कि चींटी जब घर आएगी तो उसे विभिन्न चीजें मिलेंगी, जो कि इनसानी तौर पर ठीक हो सकता है पर बच्चों को अलग-अलग जानवरों की अपनी असल फितरत से रूबरू नहीं करता। इस तरह की कहानियाँ बच्चों में इस विचार को भी बढ़ावा दे सकती हैं कि सभी जानवर भी इंसान की तरह सोचते और व्यवहार करते हैं। 'मछली' कहानी में भी यही बात नजर आती है, वास्तविकता में तो कोई मछली दूसरी को नौकरानी नहीं बनाती। हाँ, एक दूसरे को खाती जरूर हैं। 'साँप' और 'मेरी गाए जनी' और बरखा सीरीज की कहानियों में जानवरों की असल फितरत को ध्यान में रखा गया है।

अच्छा हो कि खास जानवरों की फितरत पर आधारित कहानियाँ गढ़ी जाएँ- जैसे चींटी या दीमक या मधुमक्खी झुंडों में रहते हैं और उनकी कुछ व्यवहारगत प्रकृतियाँ हैं। रानी चींटी, चींटी के गन्ध के आधार पर खाना ढूँढ़ना और दूसरों को बुलाना, इन में चींटों या मधुमक्खियों को नाम देकर कहानियाँ बनाई जा सकती हैं या फिर मछलियाँ भी झुंडों में रहती हैं अंडे देने दूर तक जाती हैं फिर बच्चे कैसे निकलते हैं, आदि बातों पर मछलियों की कहानियाँ आधारित हो सकती हैं। या फिर पेड़ पौधों की पुस्तकों की तरह जानवरों की जानकारियों के बारे में चित्र पुस्तकें बन सकती हैं। ये भी छोटे 2-3 साल के बच्चों को बहुत पसन्द आती हैं। कहानी नहीं केवल जानकारियों की चित्र-पुस्तकें।

## कुछ अलग तरह की किताबें

हाथी और चींटी (रूम टू रीड) वास्तव में कहानी की परम्परा से हटकर है। यहाँ हाथी और चींटी के आकार भिन्नता उनके व्यवहार के असर को कैसे प्रभावित करती है, यह इस पुस्तक का अक्स है। इस पुस्तक में लिखित और चित्रित में बढ़िया पूरकता ही नहीं बल्कि चित्र लिखे को विस्तार देते हैं 'हाथी ने फूँका -आँधी आ गई- आँधी का विवरण केवल चित्रों में ही है, शब्दों में नहीं। यह बहुत ही सुन्दर किताब है, जो कि बच्चों को एक अलग ही अनुभव देती है। थोड़ा सा पढ़ने की जरूरत है और चित्र की सहायता से सोचने को बहुत कुछ और है। राही कदम के चित्रों का कमाल इस में काफी मदद करता है।

ऐसी ही एक और किताब है एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'बाल्टी के अन्दर समन्दर'। इसमें घर में आने वाले नल के पानी को समन्दर के पानी से जोड़ने का प्रयास है। इस के लिए लोककथा की दोहराव की शैली का उपयोग किया गया है 'ये हैं बादल, जो करते हैं बारिश ....नदी जो मिल जाती है झील में .... पाइप से चलकर, नल से टपककर भरता है। सोनू की बालटी को' इस पूरे सफर में अलग अलग पन्नों पर बहुत ही खूबसूरत और बारीकी से -दीपा बलसावर के बनाए हुए चित्र, पाठक को न केवल सुन्दर दृश्यों में डूबने का मौका देते हैं, वरन् सोचने का भी।

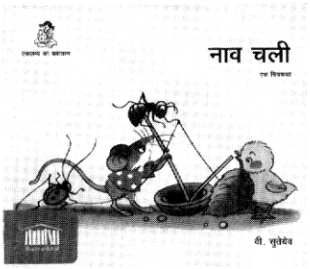


विदेशी किताबों के अनुवाद से बच्चों के लिए एक अलग ही दुनिया खुलती है। बात सदियों से आ रहीं अंग्रेजी पुस्तकों की नहीं, जितनी एशिया व अफ्रीका की कहानियों की है। ऐसी ही दो किताबें हैं 'बादलों के साथ एक दिन' और 'गाँव का बच्चा'। इन दोनों ही किताबों में लिखित सामग्री और चित्र एक दूसरे के पूरक हैं। गाँव का बच्चा जेन कोवेन फ्लेचर की एक अफ्रीकी कहानी है। ये पुस्तक के चित्र और बच्चों के नामों से पता चलता है। येमी और कोकू दो छोटे बच्चे हैं जो अपनी माँ के साथ आम बेचने बाजार जाते हैं। येमी बड़ी है और कोकू की देख भाल की जिम्मेदारी येमी की है। बीच में कोकू आँखों से ओझल हो जाता है और येमी उसे ढूँढ़ने निकलती है। इस बीच पूरा गाँव कोकू की देखभाल कैसे करता है, इस की कहानी चित्रों में दर्शायी गई है।

'बादलों के साथ एक दिन' हौदा हदादी की एक अद्भुत ईरानी कहानी है जिसके लेखक और चित्रकार दोनों ही हौदा हदादी हैं। अद्भुत इस मायने में कि बादलों के साथ रिश्ता बहुत ही मजेदार है। बादल माउथ आर्गन की धुन पर नाचते हैं, वे बरसना भूल जाते हैं और माँ उन्हें जैकेट में बुन देती हैं। भाषा की शैली बहुत सशक्त बिम्ब उकेरती है। 'उबलता दूध बर्तन से बाहर निकलकर किनारे से झांकने लगा। हवा ने देखा कि माँ दूध भूल गई हैं, तो उसने रसोई में आकर जोर से दूध को फूँका। दूध ठण्डा पड़कर बरतन में दुबक गया।' 'ठण्डा पड़ना और दुबकना' किस खूबी से ये सम्बन्ध उभारा है। इस तरह की भाषा से परिचय बच्चों की सोच को भी बढ़ाता है।

बात लम्बी निकल चली है। बच्चों की पुस्तकों का विषय ही कुछ ऐसा है। हजारों पुस्तकों पर कुछ कहने को जी चाहता है, पर कहीं तो विराम देना पड़ेगा। बाकी बातें और कभी।

**अंजली नरोन्हा**

अंजली नरोन्हा ने दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स से इकॉनोमिक्स में स्नात्तकोत्तर किया है और 1982 से एकलव्य के साथ काम कर रहीं हैं। ये आरम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थनों के लिए शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों के निर्माण, प्रशिक्षण, शोध एवं शैक्षिक कार्यक्रमों के मूल्यांकन में काम करती रहीं हैं। अभी हाल के दिनों में बहुभाषिक एवं पठन कार्यक्रम विकसित करने और एन.सी.टी.ई. के साथ शिक्षक-शिक्षा का पाठ्यक्रम विकसित करने में शामिल रहीं हैं। सम्पर्क- anjali_noronha99@yahoo.com